Higeo®
मार्कफील्ड ॲग्रोटेक
ए-12, अतिरिक्त एमआईडीसी, छ. संभाजी नगर रोड, जालना - 431 203 (MS) मोबाइल 9404470525

खरबूज

हायब्रिड्स/वाण: - श्रद्धा, राधिका

हवामान : उष्ण व कोरडे हवामान चांगले मानवते. अलीकडे कडक उन्हाळ्याचा आणि भर पावसाळ्याचा काळ सोडला तर वर्षभर कलिंगडाची लागवड केली जाते. वाढीच्या कालावधीमध्ये हवेमध्ये दमटपणा व धुके असल्यास वेलीची वाढ व्यवस्थित होत नाही. पीक रोगास बळी पडण्याची शक्यता असते.

जमीन: हे पीक सर्व प्रकारच्या जमिनीत येते. चुनखडीयुक्त खारवट, चोपण जमीन लागवडीस अयोग्य आहे. कारण अशा जमिनीत अतिप्रमाणात असणाऱ्या सोडियम, कॅल्शियम, मॅग्नेशियम सल्फेट, क्लोराईड, कार्बोनेट व बायकार्बोनेटसारख्या विद्राव्य क्षारांमुळे कलिंगडाच्या फळावर डाग पडण्याची शक्यता असते. तथापि दशावतार फवारल्याने हे फळावरील डाग थांबलेत. लागवडीसाठी हलकी, पोयट्याची, मध्यम-काळ्या ते करड्या रंगाची पाण्याचा निचरा असणारी जमीन लागवडीस योग्य आहे.

जमीन तयार करणे: या पिकास कोणत्याही प्रकारची चांगला पाण्याचा निचरा होणारी जमीन चालते. जमिनीस 3-4 वखराच्या पाळ्या देऊन चांगली भुसभुशीत करावी. भरपूर सेंद्रिय खत घातलेली चांगली मशागत केलेल्या जमिनीत पीक चांगले येते.पेरणीची वेळ:

फेब्रुवारीचा मध्य हा खरबूज लागवडीसाठी योग्य वेळ आहे.
अंतर: जातीच्या वापरानुसार ३-४ मीटर रुंदीचे बेड तयार करा. प्रत्येक टेकडीवर वाफ्यावर दोन बिया पेरा आणि दोन टेकड्यांमधील अंतर ६० सेमी ठेवा.
पेरणीची खोली: सुमारे १.५ सेमी खोल बियाणे लावा.
पेरणीची पद्धत: पेरणीसाठी खणण्याची पद्धत आणि पुनर्लागवडीच्या पद्धती वापरता येतात.

लागवड: जानेवारीच्या शेवटच्या आठवड्यात किंवा फेब्रुवारीच्या पहिल्या आठवड्यात १०० गेज जाडीच्या १५ सेमी x १२ सेमी आकाराच्या पॉलिथिन पिशवीत बियाणे पेरा. पॉलिथिन पिशवीत चांगले कुजलेले शेण आणि माती समान प्रमाणात भरा. फेब्रुवारीच्या अखेरीस किंवा मार्चच्या पहिल्या आठवड्यात रोपे लावण्यासाठी तयार होतात. २५-३० दिवसांच्या रोपांसाठी पुनर्लागवड केली जाते. पुनर्लागवड झाल्यानंतर लगेच पाणी द्या.

बियाण्याचा दर: एक एकर जमिनीत पेरणी करण्यासाठी, ४०० ग्रॅम बियाण्याचा दर आवश्यक आहे.

बियाण्याचा दर: पेरणीपूर्वी कार्बेन्डाझिम @२ ग्रॅम/किलो बियाण्यावर प्रक्रिया करा. रासायनिक प्रक्रिया केल्यानंतर, प्रति किलो बियाण्यावर ट्रायकोडर्मा व्हिराइड @४ ग्रॅम बियाण्यावर प्रक्रिया करा. सावलीत वाळवा आणि नंतर लगेच पेरणी करा.

खते: शेतातील शेणखत किंवा चांगले कुजलेले शेणखत प्रति एकर १०-१५ टन द्यावे. प्रति एकर ५० किलो, फॉस्फरस २५ किलो आणि पोटॅश २५ किलो (११० किलो युरिया, १५५ किलो सिंगल सुपर फॉस्फेट आणि ४० किलो म्युरेट ऑफ पोटॅश) द्यावे. पेरणीपूर्वी संपूर्ण फॉस्फरस, पोटॅश आणि एक तृतीयांश नायट्रोजन द्यावे. उरलेला नायट्रोजन वेलींच्या तळाशी लावावा, त्याला स्पर्श करू नये आणि सुरुवातीच्या वाढीच्या काळात मातीत चांगले मिसळावे. पीक १०-१५ दिवसांचे झाल्यावर, चांगल्या वाढीसाठी आणि चांगल्या प्रतीसाठी, १९:१९:१९ + सूक्ष्म अन्नद्रव्ये @ २-३ ग्रॅम/लिटर पाण्यात मिसळून फवारणी करावी.

Sr no	Disease/Pest	Control	Amount per litre of water
1	Powdery Mildew	Thionutri	02 g per lit
2	Anthracnose	Bavistin	01 g per lit
3	Fruit fly	Coragen	5 ml per 15 lit
4	Aphid and Thrips	Confidor Super	06 ml per 15 litre

सिंचन: उन्हाळ्यात दर आठवड्याला सिंचन द्या. परिपक्वतेच्या वेळी गरजेनुसारच सिंचन द्या. खरबूजाच्या शेतात जास्त पाणी येणे टाळा. सिंचन करताना, वेली किंवा वनस्पतींचे भाग ओले करू नका, विशेषतः फुले येताना आणि फळधारणेदरम्यान. जड जमिनीत वारंवार सिंचन टाळा कारण त्यामुळे वनस्पतींची जास्त वाढ होईल. चांगल्या गोडवा आणि चवीसाठी, कापणीच्या ३-६ दिवस आधी सिंचन थांबवा किंवा पाणी कमी करा.

तण नियंत्रण: वाढीच्या सुरुवातीच्या टप्प्यात बेड वीड मुक्त ठेवा. योग्य नियंत्रण उपायांच्या अनुपस्थितीत, तणांचे उत्पादन ३०% कमी होऊ शकते. पेरणीनंतर १५-२० दिवसांनी आंतरमशागतीची कामे करा. तणांची तीव्रतेनुसार, दोन ते तीन खुरपणी आवश्यक आहे.

काढणी : काढणी फळे पिवळी झाल्यावर करावी. बाजारातील अंतरानुसार जातींची काढणी करा.

टीप:- वरील सर्व माहिती आमच्या संशोधन केंद्रात केलेल्या प्रयोगावर आधारित आहे. वेगवेगळ्या ठिकाणी वेगवेगळ्या हवामान, मातीचा प्रकार आणि ऋतूंमुळे वरील माहिती बदलू शकते.

Higeo®
मार्कफील्ड ॲग्रोटेक
ए-12, अतिरिक्त एमआईडीसी, छ. संभाजी नगर रोड, जालना - 431 203 (MS) मोबाइल 9404470525

खरबूजा

हाइब्रिड/किस्में: - श्रद्धा, राधिका

मिट्टी: इसे गहरी उपजाऊ और अच्छे जल निकास वाली मिट्टी में उगाया जाता है। अच्छे जल निकास वाली दोमट मिट्टी में उगाने पर यह अच्छे परिणाम देती है। घटिया निकास वाली मिट्टी खरबूजे की खेती के लिए उपयुक्त नहीं होती। फसली चक्र अपनायें क्योंकि एक ही खेत में एक ही फसल उगाने से मिट्टी के पोषक तत्वों, उपज में कमी और बीमारियों का हमला भी ज्यादा होता है। मिट्टी की पी एच 6-7 के बीच होनी चाहिए। खारी मिट्टी और नमक की ज्यादा मात्रा वाली मिट्टी इसकी खेती के लिए उपयुक्त नहीं होती।

भूमि की तैयारी: मिट्टी के भुरभुरा होने तक जोताई करें। उत्तरी भारत में इसकी बिजाई फरवरी के मध्य में की जाती है। उत्तरी पूर्वी और पश्चिमी भारत में बिजाई नवंबर से जनवरी में की जाती है। खरबूजे को सीधा बीज के द्वारा और पनीरी लगाकर भी बोया जा सकता है।

बिजाई का समय: खरबूजे की बिजाई के लिए मध्य फरवरी का समय सही माना जाता है। फासला; प्रयोग करने वाली किस्म के आधार पर 3-4 मीटर चौड़े बैड तैयार करें। बैड पर प्रत्येक क्यारी में दो बीज बोयें और क्यारियों में 60 सैं.मी. का फासला रखें। बीज की गहराई: बिजाई के लिए 1.5 सैं.मी. गहरे बीज बोयें। बिजाई का ढंग: इसकी बिजाई गड्ढा खोदकर और दूसरे खेत में पनीरी लगाकर यह ढंग प्रयोग कर सकते हैं।

पनीरी लगा कर : जनवरी के आखिरी सप्ताह से फरवरी के पहले सप्ताह तक 100 गज की मोटाई वाले 15 सैं.मी. x12 सैं.मी. आकार के पॉलीथीन बैग में बीज बोया जा सकता है। पॉलीथीन बैग में गाय का गोबर और मिट्टी को एक जितनी मात्रा में भर लें। पौधे फरवरी के आखिर या मार्च के पहले सप्ताह बिजाई के लिए तैयार हो जाते हैं। 25-30 दिनों के पौधे को उखाड़कर खेत में लगा दें और पौधे खेत में लगाने के तुरंत बाद पहला पानी लगाना चाहिए।

बीज की मात्रा: एक एकड़ में बिजाई के लिए 400 ग्राम बीजों की आवश्यकता होती है।
बीज का उपचार: बिजाई से पहले कार्बेनडाज़िम 2 ग्राम से प्रति किलो बीज का उपचार करें। रासायनिक उपचार के बाद ट्राइकोडरमा विराइड 4 ग्राम से प्रति किलो बीज का उपचार करें। बीजों को छांव में सुखाएं और तुरंत बिजाई कर दें।

उर्वरक: 10-15 टन गली सड़ी रूड़ी की खाद प्रति एकड़ में डालें। नाइट्रोजन 50 किलोग्राम (यूरिया 110 किलोग्राम), फासफोरस 25 किलोग्राम (सिंगल सुपर फासफेट 155 किलोग्राम), पोटाश 25 किलोग्राम (म्यूरेट ऑफ पोटाश 40 किलोग्राम) प्रति एकड़ के हिसाब से डालें। फासफोरस और पोटाश की पूरी मात्रा और नाइट्रोजन का तीसरा हिस्सा (1/3) बिजाई से पहले डालें। नाइट्रोजन की बची हुई मात्रा शुरूआती विकास के समय मिट्टी में अच्छी तरह मिलाकर डालें और पत्तों को छूने से परहेज करें। जब फसल 10-15 दिनों की हो जाये तो फसल के अच्छे विकास और पैदावार के लिए 19:19:19 + सूक्ष्म तत्व 2-3 ग्राम प्रति लीटर पानी में डालकर स्प्रे करें।

Sr no	Disease/Pest	Control	Amount per litre of water
1	Powdery Mildew	Thionutri	02 g per lit
2	Anthracnose	Bavistin	01 g per lit
3	Fruit fly	Coragen	5 ml per 15 lit
4	Aphid and Thrips	Confidor Super	06 ml per 15 litre

सिंचाई: गर्मियों के मौसम में हर सप्ताह सिंचाई करें। पकने के समय जरूरत पड़ने पर ही सिंचाई करें। खरबूजे के खेत में ज्यादा पानी ना लगाएं। सिंचाई करते समय, बेलों या वानस्पति भागों विशेष कर फूलों और फलों पर पानी ला लगाएं। भारी मिट्टी में लगातार सिंचाई ना करें, इससे वानस्पति भागों की अत्याधिक वृद्धि होगी। अच्छे स्वाद के लिए कटाई से 3-6 दिन पहले सिंचाई बंद कर दें या कम कर दें।

खरपतवार नियंत्रण: पौधे के विकास के शुरूआती समय के दौरान बैड को नदीनों से मुक्त रखना जरूरी होता है। सही तरह से नदीनों की रोकथाम ना हो तो फल बोने से 15-20 दिनों में पैदावार 30 प्रतिशत तक कम हो जाती है। इस दौरान गोडाई करते रहना चाहिए। नदीन तेजी से बढ़ते हैं। इसलिए 2-3 गोडाई की जरूरत पड़ती है।

कटाई के बाद: कटाई के बाद फलों का तापमान और गर्मी कम करने के लिए उन्हें ठंडा किया जाता है। फलों को उनके आकार के हिसाब से बांटा जाता है। खरबूजों को कटाई के बाद 15 दिनों के लिए 2 से 5 डिगरी सैल्सियस तापमान और 95 प्रतिशत पर रखा जाता है इसके बाद जब यह पूरा पक जाता है तो इसे 5 से 14 दिनों के लिए 0-2.2 डिगरी सैल्सियस तापमान और 95 प्रतिशत नीम में रखा जाता है।

नोट:- उपरोक्त सभी जानकारी हमारे शोध केंद्र में किए गए प्रयोग पर आधारित है। उपरोक्त जानकारी अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग जलवायु, मिट्टी के प्रकार और मौसम के कारण अलग-अलग हो सकती है।

Muskmelon

Hybrids/Varieties: - Shradha, Radhika

Soil: It grows well in deep fertile and well-drained soil. It gives best result when grown on well drained loam soil. Soil having poor drainage capacity is not suited for Muskmelon cultivation. Follow crop rotation as continuous growing of same crop on same field leads loss of nutrients, poor yield and more disease attack. pH of soil should be in between 6-7. Alkaline soil with high salt concentration is not suitable for cultivation.

Land preparation: Plough land and bring to fine tilth. In North India, sowing is done in middle of February month. In North east and west India sowing is done during November to January.

Time of sowing: Middle of February is optimum time for muskmelon cultivation.
Spacing: Prepare 3-4m wide beds depending upon variety use. Sow two seeds per hill on bed and keep distance of 60cm between hill.
Sowing Depth: Plant seed about 1.5cm deep.
Method of sowing: For Sowing dibbling method and transplanting methods can be used.

Transplanting: Sow seeds in polythene bag of 15cm x 12cm size with thickness of 100 gauge in last week of January or first week of February. Fill polythene bag with equal proportion of well rotten cow dung and soil. Seedlings are ready for transplantation by end of February or first week of March. Transplantation is done for 25-30 days old seedling. Apply irrigation immediately after transplantation.

Seed Rate: For sowing in one-acre land, seed rate of 400gm seeds are required.
Seed Treatment: Before sowing treat seed with Carbendazim@2gm/kg of seeds. After chemical treatment, treat the seeds with Trichoderma viride@4gm per kg of seeds. Dry seeds in shade and then do sowing immediately.

Fertilizer: Apply Farm Yard Manure or well decomposed cowdung@10-15tonnes per acre. Apply Nitrogen@50kg, Phosphorus@25kg and Potash@25kg in form of Urea@110kg, Single Super Phosphate@155kg and Muriate of Potash@40kg per acre. Apply whole amount of Phosphorus, Potash and one third amount of Nitrogen before sowing seed. Apply remaining dose of Nitrogen near vines base, avoid touching it and mixed well in soil during initial growth period. When crop is of 10-15 days old, for good growth of crop along with good quality, take spray of 19:19:19+Micro-nutrients@ 2-3gm/Ltr of water.

Sr no	Disease/Pest	Control	Amount per litre of water
1	Powdery Mildew	Thionutri	02 g per lit
2	Anthracnose	Bavistin	01 g per lit
3	Fruit fly	Coragen	5 ml per 15 lit
4	Aphid and Thrips	Confidor Super	06 ml per 15 litre

Irrigation: Apply irrigation, every week in summer season. At time of maturity give irrigation only when needed. Avoid over flooding in muskmelon field. During application of irrigation, do not wet the vines or vegetative parts, especially during flowering and fruit-set. Avoid frequent irrigation in heavy soil as it will promote excessive vegetative growth. For better sweetness and flavor, stop irrigation or reduce watering 3-6days before harvesting.

Weed Control: Keep bed weed free during early stage of growth. In absence of proper control measures, weed can cause yield loss of 30%. 15-20days after sowing carry out intercultural operations. Depending upon severity and intensity of weeds, two to three weeding are required.

Harvesting: Harvesting of Haramadhu should be done when fruits turn to yellow. Harvest other variety depending upon market distance. For long distance markets harvest fruits at mature green stage where as for local markets harvest at half-slip stage. A slight depression of the stem end indicates half-slip stage.
After harvesting do precooling to reduce field heat. Grading is done on basis of size of fruit. Muskmelons harvested at partial slip can be held for up to 15 days at 2° to 5°C at 95% relative humidity whereas Muskmelons harvested at full slip can be held for 5 to 14 days at 0° to 2.2°C at 95% relative humidity.

Note:- All the above information is based on the experiment conducted at our research center. The above information may vary due to different climate, soil type and seasons at different places.

Higeo®

માર્કફિલ્ડ એગ્રોટેક

A-12, એડલ. MIDC, છ. સંભાજી નગર રોડ, જાલના - 431 203 (MS) મોબાઈલ 9404470525

મસ્કમેલન

વર્ણસંકર/ જાતો:- શ્રદ્ધા, રાધિકા

માટી: તે ઊંડી ફળદ્રુપ અને સારી રીતે પાણી કાઢતી જમીનમાં સારી રીતે ઉગે છે. સારી રીતે પાણી કાઢતી લોમ જમીન પર ઉગાડવામાં આવે ત્યારે તે શ્રેષ્ઠ પરિણામ આપે છે. નબળી પાણી કાઢવાની ક્ષમતા ધરાવતી જમીન તરબૂચની ખેતી માટે યોગ્ય નથી. પાક પરિભ્રમણનું પાલન કરો કારણ કે એક જ ખેતરમાં એક જ પાક સતત ઉગાડવાથી પોષક તત્વોનો નાશ થાય છે, ઉપજ ઓછી હોય છે અને રોગનો હુમલો વધુ થાય છે. જમીનનો pH ૬-૭ ની વચ્ચે હોવો જોઈએ. વધુ મીઠાની સાંદ્રતા ધરાવતી આલ્કલાઇન જમીન ખેતી માટે યોગ્ય નથી.

જમીનની તૈયારી: જમીનને ખેડવી અને સારી રીતે ખેડાણમાં લાવો. ઉત્તર ભારતમાં, વાવણી ફેબ્રુઆરી મહિનાના મધ્યમાં કરવામાં આવે છે. ઉત્તર પૂર્વ અને પશ્ચિમ ભારતમાં વાવણી નવેમ્બરથી જાન્યુઆરી દરમિયાન કરવામાં આવે છે.

વાવણીનો સમય: ફેબ્રુઆરીનો મધ્ય ભાગ તરબૂચની ખેતી માટે શ્રેષ્ઠ સમય છે.

અંતર: વિવિધતાના ઉપયોગના આધારે ૩-૪ મીટર પહોળા પથારી તૈયાર કરો. પથારી પર દરેક ટેકરી પર બે બીજ વાવો અને ટેકરી વચ્ચે 60 સેમીનું અંતર રાખો.
વાવણી ઊંડાઈ: લગભગ 1.5 સેમી ઊંડા બીજ વાવો.
વાવણી પદ્ધતિ: વાવણી માટે ખાડા નાખવાની પદ્ધતિ અને રોપણી પદ્ધતિઓનો ઉપયોગ કરી શકાય છે.

રોપણી: જાન્યુઆરીના છેલ્લા અઠવાડિયામાં અથવા ફેબ્રુઆરીના પહેલા અઠવાડિયામાં 15 સેમી x 12 સેમી કદની 100 ગેજ જાડાઈવાળી પોલિથીન બેગમાં બીજ વાવો. પોલીથીન બેગમાં સારી રીતે સડેલા ગાયના છાણ અને માટીના સમાન પ્રમાણમાં ભરો. ફેબ્રુઆરીના અંતમાં અથવા માર્ચના પહેલા અઠવાડિયા સુધીમાં રોપાઓ રોપણી માટે તૈયાર થઈ જાય છે. 25-30 દિવસના રોપા માટે રોપણી કરવામાં આવે છે. રોપણી પછી તરત જ સિંચાઈ આપો.

બીજ દર: એક એકર જમીનમાં વાવણી માટે, 400 ગ્રામ બીજનો દર જરૂરી છે.

બીજ માવજત: વાવણી પહેલાં બીજને કાર્બેન્ડાઝીમ @ 2 ગ્રામ/કિલો બીજ સાથે માવજત કરો. રાસાયણિક માવજત પછી, બીજને ટ્રાઇકોડર્મા વિરાઇડ @ 4 ગ્રામ પ્રતિ કિલો બીજ સાથે માવજત કરો. છાયામાં સૂકવો અને પછી તરત જ વાવણી કરો.

ખાતર: ખેતરમાં ખાતર અથવા સારી રીતે વિઘટિત ગાયનું છાણ @ ૧૦-૧૫ ટન પ્રતિ એકર આપવું. નાઇટ્રોજન @ ૫૦ કિલો, ફોસ્ફરસ @ ૨૫ કિલો અને પોટાશ @ ૨૫ કિલો યુરિયા @ ૧૧૦ કિલો, સિંગલ સુપર ફોસ્ફેટ @ ૧૫૫ કિલો અને મ્યુરેટ ઓફ પોટાશ @ ૪૦ કિલો પ્રતિ એકર આપવું. બીજ વાવતા પહેલા ફોસ્ફરસ, પોટાશ અને નાઇટ્રોજનનો ત્રીજો ભાગ પૂરો પાડવો. બાકીનો નાઇટ્રોજનનો જથ્થો વેલાના પાયા પાસે નાખો, તેને સ્પર્શ કરવાનું ટાળો અને શરૂઆતના વિકાસ સમયગાળા દરમિયાન જમીનમાં સારી રીતે ભેળવી દો. જ્યારે પાક ૧૦-૧૫ દિવસનો થાય, ત્યારે પાકના સારા વિકાસ અને સારી ગુણવત્તા માટે, ૧૯:૧૯:૧૯ + સૂક્ષ્મ પોષકતત્ત્વો @ ૨-૩ ગ્રામ/લિટર પાણીમાં ભેળવીને છંટકાવ કરવો.

Sr no	Disease/Pest	Control	Amount per litre of water
1	Powdery Mildew	Thionutri	02 g per lit
2	Anthracnose	Bavistin	01 g per lit
3	Fruit fly	Coragen	5 ml per 15 lit
4	Aphid and Thrips	Confidor Super	06 ml per 15 litre

સિંચાઈ: ઉનાળાની ઋતુમાં દર અઠવાડિયે પિયત આપો. પરિપક્વતાના સમયે જરૂર પડે ત્યારે જ પિયત આપો. તરબૂચના ખેતરમાં વધુ પડતું પાણી આવવાનું ટાળો. સિંચાઈ કરતી વખતે, વેલા અથવા વનસ્પતિના ભાગોને ભીના ન કરો, ખાસ કરીને ફૂલો અને ફળ બેસતા સમયે. ભારે જમીનમાં વારંવાર સિંચાઈ કરવાનું ટાળો કારણ કે તે વધુ પડતી વનસ્પતિ વૃદ્ધિને પ્રોત્સાહન આપશે. સારી મીઠાશ અને સ્વાદ માટે, લણણીના ૩-૬ દિવસ પહેલા સિંચાઈ બંધ કરો અથવા પાણી ઓછું કરો.

નિંદણ નિયંત્રણ: વૃદ્ધિના પ્રારંભિક તબક્કા દરમિયાન પથારીમાંથી નીંદણ મુક્ત રાખો. યોગ્ય નિયંત્રણ પગલાંના અભાવે, નીંદણ ૩૦% ઉપજમાં ઘટાડો કરી શકે છે. વાવણી પછી ૧૫-૨૦ દિવસ પછી આંતર-વાવેતર કામગીરી કરો. નીંદણની તીવ્રતા અને તીવ્રતાના આધારે, બે થી ત્રણ નિંદામણ જરૂરી છે.

કાપણી: હરામધુની કાપણી ફળો પીળા થાય ત્યારે કરવી જોઈએ. બજારના અંતરના આધારે અન્ય જાતોની કાપણી કરવી જોઈએ. લાંબા અંતરના બજારો માટે પાકેલા લીલા તબક્કામાં ફળોની કાપણી કરો જ્યારે સ્થાનિક બજારો માટે અડધા સરકી જવાના તબક્કામાં કાપણી કરો. થડના છેડાનો થોડો ઘટાડો અડધા સરકી જવાના તબક્કાને દર્શાવે છે.
લણણી પછી ખેતરની ગરમી ઘટાડવા માટે પ્રી-કૂલિંગ કરો. ફળના કદના આધારે ગ્રેડિંગ કરવામાં આવે છે. આંશિક સરકી જવા પર કાપવામાં આવેલા તરબૂચને 2° થી 5° સેલ્સિયસ તાપમાને 95% સાપેક્ષ ભેજ પર 15 દિવસ સુધી રાખી શકાય છે જ્યારે સંપૂર્ણ સરકી જવા પર કાપવામાં આવેલા તરબૂચને 0° થી 2.2° સેલ્સિયસ તાપમાને 95% સાપેક્ષ ભેજ પર 5 થી 14 દિવસ સુધી રાખી શકાય છે.

નોંધ:- ઉપરોક્ત બધી માહિતી અમારા સંશોધન કેન્દ્રમાં હાથ ધરવામાં આવેલા પ્રયોગ પર આધારિત છે. ઉપરોક્ત માહિતી વિવિધ સ્થળોએ વિવિધ આબોહવા, માટીના પ્રકાર અને ઋતુઓને કારણે બદલાઇ શકે છે.

Higeo®
మార్క్‌ఫీల్డ్ ఆగ్రోటెక్
A-12, Addl. MIDC, Chh. సంభాజీ నగర్ రోడ్, జల్నా - 431 203 (MS) మొబైల్ 9404470525

సీతాఫలం

హైబ్రిడ్లు/రకాలు: - శ్రద్ధ, రాధిక

నేల: ఇది లోతైన సారవంతమైన మరియు బాగా నీరు పారుదల ఉన్న నేలలో బాగా పెరుగుతుంది. బాగా నీరు పారుదల ఉన్న లోమ్ నేలలో పెరిగినప్పుడు ఇది ఉత్తమ ఫలితాన్ని ఇస్తుంది. తక్కువ నీటి పారుదల సామర్థ్యం ఉన్న నేల ముస్క్‌మెలోన్ సాగుకు తగినది కాదు. ఒకే పొలంలో ఒకే పంటను నిరంతరం పెంచడం వల్ల పోషకాలు కోల్పోతాయి, దిగుబడి తక్కువగా ఉంటుంది మరియు వ్యాధి దాడి ఎక్కువగా ఉంటుంది కాబట్టి పంట భ్రమణాన్ని అనుసరించండి. నేల pH 6-7 మధ్య ఉండాలి. అధిక ఉప్పు సాంద్రత కలిగిన ఆల్కలీన్ నేల సాగుకు తగినది కాదు.

భూమి తయారీ: భూమిని దున్ని బాగా వంగడానికి తీసుకురావాలి. ఉత్తర భారతదేశంలో, ఫిబ్రవరి నెల మధ్యలో విత్తుతారు. ఈశాన్య మరియు పశ్చిమ భారతదేశంలో నవంబర్ నుండి జనవరి వరకు విత్తుతారు.

విత్తన సమయం: ఫిబ్రవరి మధ్యలో పుచ్చకాయ సాగుకు సరైన సమయం.

అంతరం: రకాన్ని బట్టి 3-4 మీటర్ల వెడల్పు గల పడకలను సిద్ధం చేయండి. పడకపై ఉన్న కొండకు రెండు విత్తనాలను విత్తండి మరియు కొండ మధ్య 60 సెం.మీ దూరం ఉంచండి.
విత్తన లోతు: మొక్క విత్తనం సుమారు 1.5 సెం.మీ లోతు.
విత్తే విధానం: విత్తడానికి డిబ్లింగ్ పద్ధతి మరియు నాట్లు వేసే పద్ధతులను ఉపయోగించవచ్చు.

నాట్లు వేయడం: జనవరి చివరి వారంలో లేదా ఫిబ్రవరి మొదటి వారంలో 100 గేజ్ మందంతో 15 సెం.మీ x 12 సెం.మీ పరిమాణంలో ఉన్న పాలిథిన్ సంచిలో విత్తనాలను విత్తండి. బాగా కుళ్ళిన ఆవు పేడ మరియు మట్టిని సమాన నిష్పత్తిలో పాలిథిన్ సంచిలో నింపండి. ఫిబ్రవరి చివరి నాటికి లేదా మార్చి మొదటి వారం నాటికి మొలకల నాటడానికి సిద్ధంగా ఉంటాయి. 25-30 రోజుల వయస్సు గల మొలకకు నాటడం జరుగుతుంది. నాటిన వెంటనే నీటిపారుదల ఇవ్వండి.

విత్తన రేటు: ఒక ఎకరం భూమిలో విత్తడానికి, 400 గ్రాముల విత్తనాల విత్తన రేటు అవసరం.
విత్తన చికిత్స: విత్తే ముందు కార్బెండజిమ్ @ 2gm/kg విత్తనాలతో విత్తన శుద్ధి చేయండి. రసాయన చికిత్స తర్వాత, విత్తనాలను కిలో విత్తనాలకు @ 4gm ట్రైకోడెర్మా విరిడేతో శుద్ధి చేయండి. విత్తనాలను నీడలో ఆరబెట్టి వెంటనే విత్తండి.

ఎరువులు: ఎకరానికి పొలం ఎరువు లేదా బాగా కుళ్ళిన ఆవు పేడను 10-15 టన్నులకు వేయండి. ఎకరానికి నత్రజని @ 50 కిలోలు, భాస్వరం @ 25 కిలోలు మరియు పొటాష్ @ 25 కిలోలు యూరియా @ 110 కిలోలు, సింగిల్ సూపర్ ఫాస్ఫేట్ @ 155 కిలోలు మరియు మురియేట్ ఆఫ్ పొటాష్ @ 40 కిలోలు వేయండి. విత్తనం విత్తే ముందు మొత్తం భాస్వరం, పొటాష్ మరియు మూడవ వంతు నత్రజనిని వేయండి. మిగిలిన మోతాదు నత్రజనిని తీగల పునాది దగ్గర వేయండి, దానిని తాకకుండా మరియు ప్రారంభ పెరుగుదల కాలంలో మట్టిలో బాగా కలపండి. పంట 10-15 రోజుల వయస్సు ఉన్నప్పుడు, మంచి నాణ్యతతో పాటు పంట మంచి పెరుగుదల కోసం, 19:19:19+సూక్ష్మ పోషకాలు @ 2-3 గ్రాములు/లీటరు నీటిలో పిచికారీ చేయాలి.

Sr no	Disease/Pest	Control	Amount per litre of water
1	Powdery Mildew	Thionutri	02 g per lit
2	Anthracnose	Bavistin	01 g per lit
3	Fruit fly	Coragen	5 ml per 15 lit
4	Aphid and Thrips	Confidor Super	06 ml per 15 litre

నీటిపారుదల: వేసవి కాలంలో ప్రతి వారం నీటిపారుదల చేయాలి. పరిపక్వత సమయంలో అవసరమైనప్పుడు మాత్రమే నీటిపారుదల ఇవ్వండి. పుచ్చకాయ పొలంలో అధిక నీరు పోయకుండా ఉండండి. నీటిపారుదల సమయంలో, తీగలు లేదా వృక్ష భాగాలను తడి చేయవద్దు, ముఖ్యంగా పుష్పించే మరియు పండ్లు ఏర్పడే సమయంలో. బరువైన నేలలో తరచుగా నీటిపారుదల చేయవద్దు ఎందుకంటే ఇది అధిక వృక్ష పెరుగుదలను ప్రోత్సహిస్తుంది. మంచి తీపి మరియు రుచి కోసం, కోతకు 3-6 రోజుల ముందు నీటిపారుదలని ఆపండి లేదా నీరు త్రాగుట తగ్గించండి.

కలుపు నియంత్రణ: పెరుగుదల ప్రారంభ దశలో బెడ్ కలుపు లేకుండా ఉంచండి. సరైన నియంత్రణ చర్యలు లేనప్పుడు, కలుపు 30% దిగుబడి నష్టాన్ని కలిగిస్తుంది. విత్తిన 15-20 రోజుల తర్వాత అంతర్ సాంస్కృతిక కార్యకలాపాలను నిర్వహించండి. కలుపు మొక్కల తీవ్రత మరియు తీవ్రతను బట్టి, రెండు నుండి మూడు కలుపు తీయడం అవసరం.

పంట కోత: పండ్లు పసుపు రంగులోకి మారినప్పుడు హరమధు పంట కోయాలి. మార్కెట్ దూరాన్ని బట్టి ఇతర రకాల పంట కోయాలి. సుదూర మార్కెట్లలో పండ్లు పరిపక్వ ఆకుపచ్చ దశలో పండించబడతాయి, స్థానిక మార్కెట్లలో సగం జారే దశలో పండించబడతాయి. కాండం చివర కొద్దిగా కుంగిపోవడం సగం జారే దశను సూచిస్తుంది.
కోత తర్వాత పొలంలో వేడిని తగ్గించడానికి ప్రీ-కూలింగ్ చేయండి. పండ్ల పరిమాణం ఆధారంగా గ్రేడింగ్ జరుగుతుంది. పాక్షిక జారే వద్ద పండించిన పుచ్చకాయలను 2° నుండి 5°C ఉష్ణోగ్రత వద్ద 95% సాపేక్ష ఆర్ద్రత వద్ద 15 రోజుల వరకు ఉంచవచ్చు, అయితే పూర్తి జారే వద్ద పండించిన పుచ్చకాయలను 0° నుండి 2.2°C ఉష్ణోగ్రత వద్ద 95% సాపేక్ష ఆర్ద్రత వద్ద 5 నుండి 14 రోజుల వరకు ఉంచవచ్చు.

గమనిక:- పైన పేర్కొన్న సమాచారం అంతా మా పరిశోధన కేంద్రంలో నిర్వహించిన ప్రయోగం ఆధారంగా రూపొందించబడింది. పైన పేర్కొన్న సమాచారం వివిధ ప్రదేశాలలో వేర్వేరు వాతావరణం, నేల రకం మరియు రుతువుల కారణంగా మారవచ్చు.

Higeo®
ಮಾರ್ಕ್‌ಫೀಲ್ಡ್ ಅಗ್ರೋಟೆಕ್
A-12, Addl. MIDC, Chh. ಸಂಭಾಜಿ ನಗರ ರಸ್ತೆ, ಜಲ್ನಾ - 431 203 (MS) ಮೊಬೈಲ್ 9404470525

ಸೀತಾಫಲ

ವಿಶ್ರುತಳಿಗಳು/ವಿಧಗಳು: - ಶ್ರದ್ಧಾ, ರಾಧಿಕಾ

ಮಣ್ಣು: ಇದು ಆಳವಾದ ಫಲವತ್ತಾದ ಮತ್ತು ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೀರು ಬಸಿದು ಹೋಗುವ ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆಯುತ್ತದೆ. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೀರು ಬಸಿದು ಹೋಗುವ ಲೋಮ್ ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದಾಗ ಇದು ಉತ್ತಮ ಫಲಿತಾಂಶವನ್ನು ನೀಡುತ್ತದೆ. ಕಳಪೆ ಒಳಚರಂಡಿ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ಮಣ್ಣು ಕಲ್ಲಂಗಡಿ ಕೃಷಿಗೆ ಸೂಕ್ತವಲ್ಲ. ಒಂದೇ ಹೊಲದಲ್ಲಿ ಒಂದೇ ಬೆಳೆಯನ್ನು ನಿರಂತರವಾಗಿ ಬೆಳೆಯುವುದರಿಂದ ಪೋಷಕಾಂಶಗಳ ನಷ್ಟ, ಕಳಪೆ ಇಳುವರಿ ಮತ್ತು ಹೆಚ್ಚಿನ ರೋಗಗಳ ದಾಳಿಗೆ ಕಾರಣವಾಗುತ್ತದೆ. ಮಣ್ಣಿನ pH 6-7 ರ ನಡುವೆ ಇರಬೇಕು. ಹೆಚ್ಚಿನ ಉಪ್ಪು ಸಾಂದ್ರತೆಯೊಂದಿಗೆ ಕ್ವಾರೀಯ ಮಣ್ಣು ಕೃಷಿಗೆ ಸೂಕ್ತವಲ್ಲ.

ಭೂಮಿ ತಯಾರಿಕೆ: ಭೂಮಿಯನ್ನು ಉಳುಮೆ ಮಾಡಿ ಉತ್ತಮವಾದ ಹೊಲಕ್ಕೆ ತರುವುದು. ಉತ್ತರ ಭಾರತದಲ್ಲಿ, ಫೆಬ್ರವರಿ ತಿಂಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಲಾಗುತ್ತದೆ. ಈಶಾನ್ಯ ಮತ್ತು ಪಶ್ಚಿಮ ಭಾರತದಲ್ಲಿ ನವೆಂಬರ್ ನಿಂದ ಜನವರಿ ವರೆಗೆ ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಲಾಗುತ್ತದೆ.

ಬಿತ್ತನೆ ಸಮಯ: ಫೆಬ್ರವರಿ ಮಧ್ಯಭಾಗವು ಕಲ್ಲಂಗಡಿ ಕೃಷಿಗೆ ಸೂಕ್ತ ಸಮಯ.

ಅಂತರ: ವೈವಿಧ್ಯತೆಯ ಬಳಕೆಯನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸಿ 3-4 ಮೀ ಅಗಲದ ಹಾಸಿಗೆಗಳನ್ನು ಸಿದ್ಧಪಡಿಸಿ. ಹಾಸಿಗೆಯ ಮೇಲೆ ಪ್ರತಿ ಗುಡ್ಡಕ್ಕೆ ಎರಡು ಬೀಜಗಳನ್ನು ಬಿತ್ತಿ, ಗುಡ್ಡದ ನಡುವೆ 60 ಸೆಂ.ಮೀ ಅಂತರವನ್ನು ಕಾಯ್ದುಕೊಳ್ಳಿ.
ಬಿತ್ತನೆ ಆಳ: ಬೀಜವನ್ನು ಸುಮಾರು 1.5 ಸೆಂ.ಮೀ ಆಳದಲ್ಲಿ ನೆಡಬೇಕು.
ಬಿತ್ತನೆ ವಿಧಾನ: ಬಿತ್ತನೆಗಾಗಿ ಡಿಬ್ಲಿಂಗ್ ವಿಧಾನ ಮತ್ತು ನಾಟಿ ವಿಧಾನಗಳನ್ನು ಬಳಸಬಹುದು.

ನಾಟಿ: ಜನವರಿ ಕೊನೆಯ ವಾರ ಅಥವಾ ಫೆಬ್ರವರಿ ಮೊದಲ ವಾರದಲ್ಲಿ 100 ಗೇಜ್ ದಪ್ಪವಿರುವ 15 ಸೆಂ.ಮೀ x 12 ಸೆಂ.ಮೀ ಗಾತ್ರದ ಪಾಲಿಥಿನ್ ಚೀಲದಲ್ಲಿ ಬೀಜಗಳನ್ನು ಬಿತ್ತಿ. ಪಾಲಿಥಿನ್ ಚೀಲವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕೊಳೆತ ಹಸುವಿನ ಸಗಣಿ ಮತ್ತು ಮಣ್ಣಿನ ಸಮಾನ ಪ್ರಮಾಣದಲ್ಲಿ ತುಂಬಿಸಿ. ಫೆಬ್ರವರಿ ಅಂತ್ಯ ಅಥವಾ ಮಾರ್ಚ್ ಮೊದಲ ವಾರದ ವೇಳೆಗೆ ಸಸಿಗಳು ನಾಟಿಗೆ ಸಿದ್ಧವಾಗುತ್ತವೆ. 25-30 ದಿನಗಳ ಹಳೆಯ ಸಸಿಗೆ ನಾಟಿ ಮಾಡಲಾಗುತ್ತದೆ. ನಾಟಿ ಮಾಡಿದ ತಕ್ಷಣ ನೀರಾವರಿ ಮಾಡಿ.

ಬೀಜ ದರ: ಒಂದು ಎಕರೆ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಲು, 400 ಗ್ರಾಂ ಬೀಜಗಳ ಬೀಜ ದರ ಅಗತ್ಯವಿದೆ.

ಬೀಜ ಸಂಸ್ಕರಣೆ: ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡುವ ಮೊದಲು ಬೀಜವನ್ನು ಕಾರ್ಬೆಂಡಜಿಮ್ @ 2 ಗ್ರಾಂ / ಕೆಜಿ ಬೀಜಗಳೊಂದಿಗೆ ಸಂಸ್ಕರಿಸಿ. ರಾಸಾಯನಿಕ ಸಂಸ್ಕರಣೆಯ ನಂತರ, ಬೀಜಗಳನ್ನು ಪ್ರತಿ ಕೆಜಿ ಬೀಜಗಳಿಗೆ @ 4 ಗ್ರಾಂ ಟ್ರೈಕೋಡರ್ಮಾ ವಿರಿಡೆ @ ನೊಂದಿಗೆ ಸಂಸ್ಕರಿಸಿ. ನೆರಳಿನಲ್ಲಿ ಬೀಜಗಳನ್ನು ಒಣಗಿಸಿ ಮತ್ತು ತಕ್ಷಣ ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಿ.

ರಸಗೊಬ್ಬರ: ಎಕರೆಗೆ 10-15 ಟನ್‌ಗಳಷ್ಟು ಗೊಬ್ಬರ ಅಥವಾ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕೊಳೆತ ಹಸುವಿನ ಸಗಣಿ ಹಾಕಿ. ಎಕರೆಗೆ 50 ಕೆಜಿ ಸಾರಜನಕ, 25 ಕೆಜಿ ರಂಜಕ ಮತ್ತು 25 ಕೆಜಿ ಪೊಟ್ಯಾಶ್‌ನೊಂದಿಗೆ ಯೂರಿಯಾ, 110 ಕೆಜಿ ಸಿಂಗಲ್ ಸೂಪರ್ ಫಾಸ್ಫೇಟ್ ಮತ್ತು 40 ಕೆಜಿ ಮ್ಯೂರಿಯೇಟ್ ಆಫ್ ಪೊಟ್ಯಾಶ್‌ನೊಂದಿಗೆ ಸಿಂಪಡಿಸಿ. ಬೀಜ ಬಿತ್ತುವ ಮೊದಲು ಸಂಪೂರ್ಣ ಪ್ರಮಾಣದ ರಂಜಕ, ಪೊಟ್ಯಾಶ್ ಮತ್ತು ಮೂರನೇ ಒಂದು ಭಾಗದಷ್ಟು ಸಾರಜನಕವನ್ನು ಹಾಕಿ. ಉಳಿದ ಪ್ರಮಾಣದ ಸಾರಜನಕವನ್ನು ಬಳ್ಳಿಗಳ ಬುಡದ ಬಳಿ ಹಾಕಿ, ಅದನ್ನು ಮುಟ್ಟಬೇಡಿ ಮತ್ತು ಆರಂಭಿಕ ಬೆಳವಣಿಗೆಯ ಅವಧಿಯಲ್ಲಿ ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಿಶ್ರಣ ಮಾಡಿ. ಬೆಳೆ 10-15 ದಿನಗಳ ಹಳೆಯದಾಗಿದ್ದಾಗ, ಉತ್ತಮ ಗುಣಮಟ್ಟದ ಜೊತೆಗೆ ಬೆಳೆಯ ಉತ್ತಮ ಬೆಳವಣಿಗೆಗೆ, 19:19:19+ಸೂಕ್ಷ್ಮ ಪೋಷಕಾಂಶಗಳನ್ನು 2-3 ಗ್ರಾಂ/ಲೀಟರ್ ನೀರಿಗೆ ಸಿಂಪಡಿಸಿ.

Sr no	Disease/Pest	Control	Amount per litre of water
1	Powdery Mildew	Thionutri	02 g per lit
2	Anthracnose	Bavistin	01 g per lit
3	Fruit fly	Coragen	5 ml per 15 lit
4	Aphid and Thrips	Confidor Super	06 ml per 15 litre

ನೀರಾವರಿ: ಬೇಸಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿ ವಾರ ನೀರಾವರಿ ಮಾಡಿ. ಪಕ್ವತೆಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಅಗತ್ಯವಿದ್ದಾಗ ಮಾತ್ರ ನೀರಾವರಿ ನೀಡಿ. ಕಲ್ಲಂಗಡಿ ಹೊಲದಲ್ಲಿ ಅತಿಯಾದ ನೀರು ಹರಿಯುವುದನ್ನು ತಪ್ಪಿಸಿ. ನೀರಾವರಿ ಮಾಡುವಾಗ, ಬಳ್ಳಿಗಳು ಅಥವಾ ಸಸ್ಯಕ ಭಾಗಗಳನ್ನು ತೇವಗೊಳಿಸಬೇಡಿ, ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಹೂಬಿಡುವ ಮತ್ತು ಹಣ್ಣು ಬಿಡುವ ಸಮಯದಲ್ಲಿ. ಭಾರೀ ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಆಗಾಗ್ಗೆ ನೀರಾವರಿ ಮಾಡುವುದನ್ನು ತಪ್ಪಿಸಿ ಏಕೆಂದರೆ ಇದು ಅತಿಯಾದ ಸಸ್ಯಕ ಬೆಳವಣಿಗೆಯನ್ನು ಉತ್ತೇಜಿಸುತ್ತದೆ. ಉತ್ತಮ ಸಿಹಿ ಮತ್ತು ಸುವಾಸನೆಗಾಗಿ, ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡುವ 3-6 ದಿನಗಳ ಮೊದಲು ನೀರಾವರಿಯನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸಿ ಅಥವಾ ನೀರುಹಾಕುವುದನ್ನು ಕಡಿಮೆ ಮಾಡಿ.

ಕಳೆ ನಿಯಂತ್ರಣ: ಬೆಳವಣಿಗೆಯ ಆರಂಭಿಕ ಹಂತದಲ್ಲಿ ಹಾಸಿಗೆ ಕಳೆಗಳನ್ನು ಮುಕ್ತವಾಗಿಡಿ. ಸರಿಯಾದ ನಿಯಂತ್ರಣ ಕ್ರಮಗಳ ಅನುಪಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿ, ಕಳೆ 30% ಇಳುವರಿ ನಷ್ಟಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗಬಹುದು. ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಿದ 15-20 ದಿನಗಳ ನಂತರ ಅಂತರ ಕೃಷಿ ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆಗಳನ್ನು ಕೈಗೊಳ್ಳಿ. ಕಳೆಗಳ ತೀವ್ರತೆ ಮತ್ತು ತೀವ್ರತೆಯನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸಿ, ಎರಡರಿಂದ ಮೂರು ಕಳೆ ತೆಗೆಯುವ ಅಗತ್ಯವಿದೆ.

ಕೊಯ್ಲು: ಹಣ್ಣುಗಳು ಹಳದಿ ಬಣ್ಣಕ್ಕೆ ತಿರುಗಿದಾಗ ಹರಮಧುವಿನ ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡಬೇಕು. ಮಾರುಕಟ್ಟೆಯ ಅಂತರವನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸಿ ಇತರ ಪ್ರಭೇದಗಳನ್ನು ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡಬೇಕು. ದೂರದ ಮಾರುಕಟ್ಟೆಗಳಲ್ಲಿ ಹಣ್ಣುಗಳನ್ನು ಪ್ರೌಢ ಹಸಿರು ಹಂತದಲ್ಲಿ ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡಬೇಕು, ಸ್ಥಳೀಯ ಮಾರುಕಟ್ಟೆಗಳಲ್ಲಿ ಅರ್ಧ ಜಾರುವ ಹಂತದಲ್ಲಿ ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡಬೇಕು. ಕಾಂಡದ ತುದಿಯಲ್ಲಿ ಸ್ವಲ್ಪ ಕುಸಿತ ಕಂಡುಬಂದರೆ ಅರ್ಧ ಜಾರುವ ಹಂತವನ್ನು ಸೂಚಿಸುತ್ತದೆ.
ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡಿದ ನಂತರ ಹೊಲದ ಶಾಖವನ್ನು ಕಡಿಮೆ ಮಾಡಲು ಪೂರ್ವ ತಂಪಾಗಿಸುವಿಕೆಯನ್ನು ಮಾಡಿ. ಹಣ್ಣಿನ ಗಾತ್ರದ ಆಧಾರದ ಮೇಲೆ ಶ್ರೇಣೀಕರಣ ಮಾಡಲಾಗುತ್ತದೆ. ಭಾಗಶಃ ಜಾರುವ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡಿದ ಕಲ್ಲಂಗಡಿಗಳನ್ನು 2° ರಿಂದ 5°C ತಾಪಮಾನದಲ್ಲಿ 95% ಸಾಪೇಕ್ಷ ಆರ್ದ್ರತೆಯಲ್ಲಿ 15 ದಿನಗಳವರೆಗೆ ಹಿಡಿದಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳಬಹುದು, ಆದರೆ ಪೂರ್ಣ ಜಾರುವ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡಿದ ಕಲ್ಲಂಗಡಿಗಳನ್ನು 0° ರಿಂದ 2.2°C ತಾಪಮಾನದಲ್ಲಿ 95% ಸಾಪೇಕ್ಷ ಆರ್ದ್ರತೆಯಲ್ಲಿ 5 ರಿಂದ 14 ದಿನಗಳವರೆಗೆ ಹಿಡಿದಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳಬಹುದು.

ಗಮನಿಸಿ:- ಮೇಲಿನ ಎಲ್ಲಾ ಮಾಹಿತಿಯು ನಮ್ಮ ಸಂಶೋಧನಾ ಕೇಂದ್ರದಲ್ಲಿ ನಡೆಸಿದ ಪ್ರಯೋಗವನ್ನು ಆಧರಿಸಿದೆ. ಮೇಲಿನ ಮಾಹಿತಿಯು ವಿಭಿನ್ನ ಹವಾಮಾನ, ಮಣ್ಣಿನ ಪ್ರಕಾರ ಮತ್ತು ವಿವಿಧ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿನ ಋತುಮಾನಗಳನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸಿ ಬದಲಾಗಬಹುದು.

Higeo®

मार्कफिल्ड एग्र'टेक
এ-১২, এডল. এম আই ডি চি, ছ. সম্ভাজী নগৰ ৰোড, জালনা - ৪৩১ ২০৩ (এম এছ) মোবাইল ৯৪০৪৪৭০৫২৫

কস্তুৰী

সংকৰ/জাত:- শ্ৰাধা, ৰাধিকা

মাটিঃ গভীৰ সাৰুৱা আৰু ভালদৰে পানী ওলোৱা মাটিত ভালকৈ গজে। ভালদৰে পানী ওলাই যোৱা লোম মাটিত খেতি কৰিলে ই সৰ্বোত্তম ফলাফল দিয়ে। পানী নিষ্কাশন ক্ষমতা কম থকা মাটি মাস্কমলন খেতিৰ বাবে উপযোগী নহয়। শস্যৰ আৱৰ্তন অনুসৰণ কৰক কাৰণ একেখন পথাৰত একেটা শস্যৰ অবিৰত খেতি কৰিলে পুষ্টিকৰ উপাদানৰ ক্ষতি হয়, উৎপাদন কম হয় আৰু ৰোগৰ আক্ৰমণ অধিক হয়। মাটিৰ পি এইচ ৬-৭ৰ ভিতৰত হ'ব লাগে। অধিক নিমখৰ ঘনত্ব থকা ক্ষাৰকীয় মাটি খেতিৰ বাবে উপযোগী নহয়।

মাটি প্ৰস্তুত কৰা: মাটি হাল বাই মিহি খেতি কৰিবলৈ আনিব। উত্তৰ ভাৰতত ফেব্ৰুৱাৰী মাহৰ মাজভাগত বীজ সিঁচা হয়। উত্তৰ-পূব আৰু পশ্চিম ভাৰতত নৱেম্বৰৰ পৰা জানুৱাৰী মাহৰ ভিতৰত বীজ সিঁচা হয়।

বীজ সিঁচাৰ সময়: ফেব্ৰুৱাৰী মাহৰ মাজভাগ কস্তুৰী খেতিৰ বাবে অনুকূল সময়।
ব্যৱধান: জাতৰ ব্যৱহাৰৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰি ৩-4 মিটাৰ বহল বিচনা প্ৰস্তুত কৰক। বিচনাত প্ৰতিটো পাহাৰত দুটাকৈ বীজ সিঁচি পাহাৰৰ মাজত ৬০চে.মি.
বীজ সিঁচাৰ গভীৰতা: প্ৰায় ১.৫ চে.মি. দ বীজ ৰোপণ কৰিব লাগে।
বীজ সিঁচাৰ পদ্ধতি: বীজ সিঁচাৰ বাবে ডিবলিং পদ্ধতি আৰু ৰোপণ পদ্ধতি ব্যৱহাৰ কৰিব পাৰি।

ৰোপণ: জানুৱাৰী মাহৰ শেষ সপ্তাহত বা ফেব্ৰুৱাৰী মাহৰ প্ৰথম সপ্তাহত ১৫চে.মি x ১২চে.মি. আকাৰৰ পলিথিন বেগত ১০০ গেজ ডাঠকৈ বীজ সিঁচিব লাগে। পলিথিন বেগত সমান অনুপাতত ভালদৰে পচি যোৱা গৰুৰ গোবৰ আৰু মাটি ভৰাই দিব লাগে। ফেব্ৰুৱাৰী মাহৰ শেষৰ ফালে বা মাৰ্চ মাহৰ প্ৰথম সপ্তাহৰ ভিতৰত পুলি ৰোপণৰ বাবে সাজু হয়। ২৫-৩০ দিন বয়সৰ পুলিৰ বাবে ৰোপণ কৰা হয়। ৰোপণ কৰাৰ লগে লগে জলসিঞ্চন প্ৰয়োগ কৰিব লাগে।

বীজৰ হাৰঃ এক একৰ মাটিত বীজ সিঁচাৰ বাবে বীজৰ হাৰ ৪০০গ্ৰাম বীজৰ প্ৰয়োজন হয়।
বীজৰ চিকিৎসা: বীজ সিঁচাৰ আগতে বীজত Carbendazim@2gm/kg বীজৰ দ্বাৰা শোধন কৰক। ৰাসায়নিক শোধনৰ পিছত বীজবোৰ প্ৰতি কেজি বীজত Trichoderma viride@4gm ৰ দ্বাৰা শোধন কৰিব লাগে। ছাঁত বীজ শুকুৱাই তাৰ পিছত লগে লগে বীজ সিঁচা কৰক।

সাৰ: ফাৰ্ম চোতালৰ গোবৰ বা ভালদৰে পচি যোৱা গৰুৰ গোবৰ@১০-১৫টন প্ৰতি একৰত প্ৰয়োগ কৰিব লাগে। প্ৰতি একৰত নাইট্ৰজেন@৫০কিলোগ্ৰাম, ফছফৰাছ@২৫কিলোগ্ৰাম আৰু পটাছ@২৫কিলোগ্ৰাম ইউৰিয়া@১১০কিলোগ্ৰাম, চিংগল ছুপাৰ ফছফেট@১৫৫কিলোগ্ৰাম আৰু মিউৰিয়েট অৱ পটাছ@৪০কিলোগ্ৰামৰ ৰূপত প্ৰয়োগ কৰিব লাগে। বীজ সিঁচাৰ আগতে গোটেই পৰিমাণৰ ফছফৰাছ, পটাছ আৰু এক তৃতীয়াংশ নাইট্ৰ'জেন প্ৰয়োগ কৰিব লাগে। লতাৰ গুৰিৰ ওচৰত নাইট্ৰজেনৰ বাকী থকা মাত্ৰা প্ৰয়োগ কৰক, ইয়াক স্পৰ্শ নকৰিব আৰু প্ৰাৰম্ভিক বৃদ্ধিৰ সময়ছোৱাত মাটিত ভালদৰে মিহলাই লওক। শস্য ১০-১৫ দিনৰ হ'লে ভাল মানৰ লগতে শস্যৰ ভাল বৃদ্ধিৰ বাবে ১৯:১৯:১৯+Micro-nutrients@ ২-৩gm/Ltr পানীৰ স্প্ৰে' খাব লাগে।

Sr no	Disease/Pest	Control	Amount per litre of water
1	Powdery Mildew	Thionutri	02 g per lit
2	Anthracnose	Bavistin	01 g per lit
3	Fruit fly	Coragen	5 ml per 15 lit
4	Aphid and Thrips	Confidor Super	06 ml per 15 litre

জলসিঞ্চন: জলসিঞ্চন প্ৰয়োগ কৰক, প্ৰতি সপ্তাহত গ্ৰীষ্মকালত। পৰিপক্কতাৰ সময়ত প্ৰয়োজনৰ সময়তহে জলসিঞ্চন দিব লাগে। কস্তুৰী পথাৰত অতিমাত্ৰা বানপানী হোৱাৰ পৰা বিৰত থাকিব। জলসিঞ্চন প্ৰয়োগৰ সময়ত বিশেষকৈ ফুল ফুলা আৰু ফল-মূলৰ সময়ত লতা বা গছ-গছনিৰ অংশ তিয়াই নিদিব। গধুৰ মাটিত সঘনাই জলসিঞ্চন কৰাটো পৰিহাৰ কৰিব লাগে কাৰণ ইয়াৰ ফলত গছ-গছনিৰ অত্যধিক বৃদ্ধি হ'ব। উন্নত মিঠা আৰু সোৱাদৰ বাবে চপোৱাৰ ৩-৬দিন আগতে জলসিঞ্চন বন্ধ কৰক বা পানী দিয়া কমাই দিব লাগে।

অপতৃণ নিয়ন্ত্ৰণ: বৃদ্ধিৰ প্ৰাৰম্ভিক অৱস্থাত বিচনা অপতৃণমুক্ত কৰি ৰাখিব লাগে। সঠিক নিয়ন্ত্ৰণ ব্যৱস্থাৰ অভাৱত অপতৃণৰ ফলত ৩০% উৎপাদন ক্ষতি হ'ব পাৰে। বীজ সিঁচাৰ ১৫-২০দিনৰ পিছত আন্তঃসাংস্কৃতিক কাৰ্য্যকলাপ চলাব লাগে। অপতৃণৰ তীব্ৰতা আৰু তীব্ৰতাৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰি দুবাৰৰ পৰা তিনিবাৰকৈ অপতৃণৰ প্ৰয়োজন হয়।

চপোৱা: হাৰামাধুৰ চপোৱা ফল হালধীয়া হ'লে কৰিব লাগে। বজাৰৰ দূৰত্বৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰি অন্যান্য জাত চপোৱা। দীৰ্ঘ দূৰত্বৰ বজাৰত পৰিপক্ক সেউজীয়া পৰ্যায়ত ফল চপোৱা হয় য'ত স্থানীয় বজাৰৰ ক্ষেত্ৰত আধা পিছলি যোৱা পৰ্যায়ত চপোৱা হয়। কাণ্ডৰ শেষৰ ফালে সামান্য তললৈ নামিলে আধা পিছলি যোৱা অৱস্থাৰ ইংগিত পোৱা যায়।
চপোৱাৰ পিছত পথাৰৰ তাপ কম কৰিবলৈ প্ৰিকুলিং কৰক। ফলৰ আকাৰৰ ভিত্তিত গ্ৰেডিং কৰা হয়। আংশিক স্লিপত চপোৱা মাস্কমেলনক ৯৫% আপেক্ষিক আৰ্দ্ৰতাত ২°ৰ পৰা ৫ ডিগ্ৰী চেলছিয়াছত ১৫ দিনলৈকে ৰাখিব পাৰি আনহাতে সম্পূৰ্ণ স্লিপত চপোৱা মাস্কমেলনক ৯৫% আপেক্ষিক আৰ্দ্ৰতাত ০°ৰ পৰা ২.২ ডিগ্ৰী চেলছিয়াছত ৫ৰ পৰা ১৪ দিন ধৰি ৰাখিব পাৰি।

বি:দ্ৰ:- ওপৰৰ সকলো তথ্য আমাৰ গৱেষণা কেন্দ্ৰত কৰা পৰীক্ষাৰ ওপৰত ভিত্তি কৰি দিয়া হৈছে। বিভিন্ন স্থানত বিভিন্ন জলবায়ু, মাটিৰ প্ৰকাৰ আৰু ঋতুৰ বাবে ওপৰৰ তথ্যসমূহ ভিন্ন হ'ব পাৰে।

Higeo®
মার্কফিল্ড অ্যাগ্রোটেক
এ-১২, অতিরিক্ত। এমআইডিসি, ছ। সম্ভাজি নগর রোড, জালনা - 431 203 (MS) মোবাইল 9404470525

তরমুজ

হাইব্রিড / জাত:- শ্রদ্ধা, রাধিকা

মাটি: এটি গভীর উর্বর এবং সুনিষ্কাশিত মাটিতে ভালো জন্মে। সুনিষ্কাশিত দোআঁশ মাটিতে চাষ করলে এটি সবচেয়ে ভালো ফলন দেয়। দুর্বল নিষ্কাশন ক্ষমতা সম্পন্ন মাটি তরমুজ চাষের জন্য উপযুক্ত নয়। ফসলের আবর্তন অনুসরণ করুন কারণ একই জমিতে একই ফসল ক্রমাগত চাষ করলে পুষ্টির ক্ষতি হয়, ফলন কম হয় এবং রোগের আক্রমণ বেশি হয়। মাটির pH ৬-৭ এর মধ্যে হওয়া উচিত। উচ্চ লবণাক্ততা সহ ক্ষারীয় মাটি চাষের জন্য উপযুক্ত নয়।

ভূমি প্রস্তুতি: জমি চাষ করুন এবং ভালোভাবে চাষ করুন। উত্তর ভারতে, ফেব্রুয়ারি মাসের মাঝামাঝি সময়ে বপন করা হয়। উত্তর-পূর্ব এবং পশ্চিম ভারতে নভেম্বর থেকে জানুয়ারি পর্যন্ত বপন করা হয়।

বপনের সময়: ফেব্রুয়ারির মাঝামাঝি তরমুজ চাষের জন্য সর্বোত্তম সময়।

ব্যয়: জাতের ব্যবহারের উপর নির্ভর করে ৩-৪ মিটার প্রশস্ত বেড প্রস্তুত করুন। প্রতি টিলার বিছানায় দুটি করে বীজ বপন করুন এবং টিলার মধ্যে ৬০ সেমি দূরত্ব রাখুন।

বপন গভীরতা: প্রায় ১.৫ সেমি গভীরে বীজ বপন করুন।

বপন পদ্ধতি: বপনের জন্য ডিবলিং পদ্ধতি এবং রোপণ পদ্ধতি ব্যবহার করা যেতে পারে।

রোপন: জানুয়ারী মাসের শেষ সপ্তাহে বা ফেব্রুয়ারির প্রথম সপ্তাহে ১০০ গেজ পুরুত্বের ১৫ সেমি x ১২ সেমি আকারের পলিথিন ব্যাগে বীজ বপন করুন। পলিথিন ব্যাগে সমান অনুপাতে পচা গোবর এবং মাটি ভরে দিন। ফেব্রুয়ারির শেষের দিকে বা মার্চের প্রথম সপ্তাহে চারা রোপণের জন্য প্রস্তুত হয়ে যায়। ২৫-৩০ দিন বয়সী চারার জন্য রোপণ করা হয়। রোপণের পরপরই সেচ দিন।

বীজহার: এক একর জমিতে বপনের জন্য, ৪০০ গ্রাম বীজের হার প্রয়োজন।

বীজহার: বপনের আগে কার্বেনডাজিম @২ গ্রাম / কেজি বীজ দিয়ে বীজ শোধন করুন। রাসায়নিক শোধনের পর, প্রতি কেজি বীজে ট্রাইকোডার্মা ভিরাইড @৪ গ্রাম দিয়ে বীজ শোধন করুন। ছায়ায় বীজ শুকিয়ে নিন এবং তারপর অবিলম্বে বপন করুন।

সার: প্রতি একরে খামারের সার বা ভালোভাবে পচা গোবর ১০-১৫ টন প্রয়োগ করুন। প্রতি একরে নাইট্রোজেন ৫০ কেজি, ফসফরাস ২৫ কেজি এবং পটাশ ২৫ কেজি (১১০ কেজি ইউরিয়া, ১৫৫ কেজি সিঙ্গেল সুপার ফসফেট এবং ৪০ কেজি মিউরেট অফ পটাশ) প্রয়োগ করুন। বীজ বপনের আগে সম্পূর্ণ পরিমাণ ফসফরাস, পটাশ এবং এক তৃতীয়াংশ নাইট্রোজেন প্রয়োগ করুন। নাইট্রোজেনের অবশিষ্ট মাত্রা লতার গোড়ার কাছে প্রয়োগ করুন, এটি স্পর্শ করা এড়িয়ে চলুন এবং প্রাথমিক বৃদ্ধির সময় মাটিতে ভালভাবে মিশিয়ে দিন। ফসলের বয়স ১০-১৫ দিন হলে, ফসলের ভালো বৃদ্ধি এবং ভালো মানের জন্য, ১৯:১৯:১৯ + মাইক্রো-নিউট্রিয়েন্ট @ ২-৩ গ্রাম / লিটার জলে স্প্রে করুন।

Sr no	Disease/Pest	Control	Amount per litre of water
1	Powdery Mildew	Thionutri	02 g per lit
2	Anthracnose	Bavistin	01 g per lit
3	Fruit fly	Coragen	5 ml per 15 lit
4	Aphid and Thrips	Confidor Super	06 ml per 15 litre

সেচ: গ্রীষ্মকালে প্রতি সপ্তাহে সেচ দিন। পরিপক্কতার সময় কেবল প্রয়োজনে সেচ দিন। তরমুজের জমিতে অতিরিক্ত জলাবদ্ধতা এড়িয়ে চলুন। সেচ দেওয়ার সময়, লতা বা উদ্ভিদের অংশ ভেজাবেন না, বিশেষ করে ফুল ফোটার এবং ফল ধরার সময়। ভারী মাটিতে ঘন ঘন সেচ এড়িয়ে চলুন কারণ এটি অতিরিক্ত উদ্ভিদের বৃদ্ধিকে উৎসাহিত করবে। ভালো মিষ্টি এবং স্বাদের জন্য, ফসল কাটার ৩-৬ দিন আগে সেচ বন্ধ করুন বা জল কমিয়ে দিন।

আগাছা নিয়ন্ত্রণ: বৃদ্ধির প্রাথমিক পর্যায়ে বিছানার আগাছা মুক্ত রাখুন। সঠিক নিয়ন্ত্রণ ব্যবস্থার অভাবে, আগাছা ৩০% ফলন হ্রাস করতে পারে। বপনের ১৫-২০ দিন পর আন্তঃচাষ পরিচালনা করুন। আগাছার তীব্রতা এবং তীব্রতার উপর নির্ভর করে, দুই থেকে তিনবার আগাছা নিধন করতে হবে।

ফসল তোলা: ফল হলুদ হয়ে গেলে হারামধু ফসল তোলা উচিত। বাজারের দূরত্বের উপর নির্ভর করে অন্যান্য জাতের ফসল তোলা উচিত। দীর্ঘ দূরত্বের বাজারের জন্য পরিপক্ক সবুজ পর্যায়ে ফল সংগ্রহ করা হয় যেখানে স্থানীয় বাজারের জন্য অর্ধ-স্লিপ পর্যায়ে ফসল সংগ্রহ করা হয়। কাণ্ডের প্রান্তের সামান্য অবনতি অর্ধ-স্লিপ পর্যায়ে নির্দেশ করে।
ফসল তোলার পরে ক্ষেতের তাপ কমাতে প্রি-কুলিং করুন। ফলের আকারের ভিত্তিতে গ্রেডিং করা হয়। আংশিক স্লিপে কাটা তরমুজ 2° থেকে 5° সেলসিয়াসে 95% আপেক্ষিক আর্দ্রতায় 15 দিন পর্যন্ত ধরে রাখা যেতে পারে যেখানে সম্পূর্ণ স্লিপে কাটা তরমুজ 0° থেকে 2.2° সেলসিয়াসে 95% আপেক্ষিক আর্দ্রতায় 5 থেকে 14 দিন ধরে রাখা যেতে পারে।
ng
বিঃদ্রঃ:- উপরের সমস্ত তথ্য আমাদের গবেষণা কেন্দ্রে পরিচালিত পরীক্ষার উপর ভিত্তি করে। বিভিন্ন স্থানে বিভিন্ন জলবায়ু, মাটির ধরণ এবং ঋতুর কারণে উপরের তথ্য পরিবর্তিত হতে পারে।

Higeo®
ਮਾਰਕਫੀਲਡ ਐਗਰੋਟੈਕ
ਏ-12, ਐਡੀਸ਼ਨਲ। ਐਮ.ਆਈ.ਡੀ.ਸੀ., ਛ. ਸੰਭਾਜੀ ਨਗਰ ਰੋਡ, ਜਾਲਨਾ - 431 203 (ਐੱਮ. ਐੱਸ.) ਮੋਬਾਈਲ 9404470525

ਖਰਬੂਜ਼ਾ

ਹਾਈਬ੍ਰਿਡ/ਵਰਾਇਟੀਜ਼:- ਸ਼ਰਾਧਾ, ਰਾਧਿਕਾ

ਮਿੱਟੀ: ਇਹ ਡੂੰਘੀ ਉਪਜਾਊ ਅਤੇ ਚੰਗੀ ਨਿਕਾਸ ਵਾਲੀ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਉੱਗਦੀ ਹੈ। ਇਹ ਚੰਗੀ ਨਿਕਾਸ ਵਾਲੀ ਦੋਮਟ ਮਿੱਟੀ 'ਤੇ ਉਗਾਉਣ 'ਤੇ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਨਤੀਜਾ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਮਾੜੀ ਨਿਕਾਸੀ ਸਮਰੱਥਾ ਵਾਲੀ ਮਿੱਟੀ ਖਰਬੂਜ਼ਾ ਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਲਈ ਢੁਕਵੀਂ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਫਸਲੀ ਚੱਕਰ ਦੀ ਪਾਲਣਾ ਕਰੋ ਕਿਉਂਕਿ ਇੱਕੋ ਖੇਤ ਵਿੱਚ ਇੱਕੋ ਫਸਲ ਨੂੰ ਲਗਾਤਾਰ ਉਗਾਉਣ ਨਾਲ ਪੌਸ਼ਟਿਕ ਤੱਤਾਂ ਦਾ ਨੁਕਸਾਨ, ਘੱਟ ਝਾੜ ਅਤੇ ਬਿਮਾਰੀ ਦਾ ਹਮਲਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਮਿੱਟੀ ਦਾ pH 6-7 ਦੇ ਵਿਚਕਾਰ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਜ਼ਿਆਦਾ ਲੂਣ ਗਾੜ੍ਹਾਪਣ ਵਾਲੀ ਖਾਰੀ ਮਿੱਟੀ ਕਾਸ਼ਤ ਲਈ ਢੁਕਵੀਂ ਨਹੀਂ ਹੈ।

ਜ਼ਮੀਨ ਦੀ ਤਿਆਰੀ: ਜ਼ਮੀਨ ਨੂੰ ਵਾਹੋ ਅਤੇ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਭੁਰਭੁਰਾ ਬਣਾਓ। ਉੱਤਰੀ ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ, ਬਿਜਾਈ ਫਰਵਰੀ ਮਹੀਨੇ ਦੇ ਮੱਧ ਵਿੱਚ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਉੱਤਰ ਪੂਰਬ ਅਤੇ ਪੱਛਮੀ ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਬਿਜਾਈ ਨਵੰਬਰ ਤੋਂ ਜਨਵਰੀ ਦੌਰਾਨ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਬਿਜਾਈ ਦਾ ਸਮਾਂ: ਫਰਵਰੀ ਦਾ ਮੱਧ ਖਰਬੂਜ਼ਾ ਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਲਈ ਢੁਕਵਾਂ ਸਮਾਂ ਹੈ।

ਵਿੱਥ: ਕਿਸਮਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਦੇ ਆਧਾਰ 'ਤੇ 3-4 ਮੀਟਰ ਚੌੜੇ ਬੈੱਡ ਤਿਆਰ ਕਰੋ। ਬੈੱਡ 'ਤੇ ਪ੍ਰਤੀ ਪਹਾੜੀ ਦੋ ਬੀਜ ਬੀਜੋ ਅਤੇ ਪਹਾੜੀ ਵਿਚਕਾਰ 60 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਦੀ ਦੂਰੀ ਰੱਖੋ। ਬਿਜਾਈ ਦੀ ਡੂੰਘਾਈ: ਲਗਭਗ 1.5 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਡੂੰਘਾ ਬੀਜੋ।

ਬਿਜਾਈ ਦਾ ਤਰੀਕਾ: ਬਿਜਾਈ ਲਈ ਟੋਏ ਪੁੱਟਣ ਦਾ ਤਰੀਕਾ ਅਤੇ ਟ੍ਰਾਂਸਪਲਾਂਟਿੰਗ ਦੇ ਤਰੀਕੇ ਵਰਤੇ ਜਾ ਸਕਦੇ ਹਨ।

ਟ੍ਰਾਂਸਪਲਾਂਟਿੰਗ: ਜਨਵਰੀ ਦੇ ਆਖਰੀ ਹਫ਼ਤੇ ਜਾਂ ਫਰਵਰੀ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਹਫ਼ਤੇ ਵਿੱਚ 15 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ x 12 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਆਕਾਰ ਦੇ 100 ਗੇਜ ਮੋਟਾਈ ਵਾਲੇ ਪੋਲੀਥੀਨ ਬੈਗ ਵਿੱਚ ਬੀਜ ਬੀਜੋ। ਪੋਲੀਥੀਨ ਬੈਗ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸੜੇ ਹੋਏ ਗੋਬਰ ਅਤੇ ਮਿੱਟੀ ਦੇ ਬਰਾਬਰ ਅਨੁਪਾਤ ਨਾਲ ਭਰੋ। ਪੌਦੇ ਫਰਵਰੀ ਦੇ ਅੰਤ ਜਾਂ ਮਾਰਚ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਹਫ਼ਤੇ ਤੱਕ ਟ੍ਰਾਂਸਪਲਾਂਟ ਲਈ ਤਿਆਰ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। 25-30 ਦਿਨ ਪੁਰਾਣੇ ਬੀਜ ਲਈ ਟ੍ਰਾਂਸਪਲਾਂਟ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਟ੍ਰਾਂਸਪਲਾਂਟੇਸ਼ਨ ਤੋਂ ਤੁਰੰਤ ਬਾਅਦ ਸਿੰਚਾਈ ਕਰੋ।

ਬੀਜ ਦਰ: ਇੱਕ ਏਕੜ ਜ਼ਮੀਨ ਵਿੱਚ ਬਿਜਾਈ ਲਈ, 400 ਗ੍ਰਾਮ ਬੀਜ ਦੀ ਬੀਜ ਦਰ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਬੀਜ ਉਪਚਾਰ: ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਬੀਜ ਨੂੰ ਕਾਰਬੈਂਡਾਜ਼ਿਮ @ 2 ਗ੍ਰਾਮ / ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਬੀਜ ਨਾਲ ਸੋਧੋ। ਰਸਾਇਣਕ ਉਪਚਾਰ ਤੋਂ ਬਾਅਦ, ਬੀਜਾਂ ਨੂੰ ਟ੍ਰਾਈਕੋਡਰਮਾ ਵਿਰਾਈਡ @ 4 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਬੀਜ ਨਾਲ ਸੋਧੋ। ਬੀਜਾਂ ਨੂੰ ਛਾਂ ਵਿੱਚ ਸੁਕਾਓ ਅਤੇ ਫਿਰ ਤੁਰੰਤ ਬਿਜਾਈ ਕਰੋ।

ਖਾਦ: ਖੇਤ ਦੀ ਖਾਦ ਜਾਂ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਗਲਿਆ ਹੋਇਆ ਗੋਬਰ 10-15 ਟਨ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਪਾਓ। ਨਾਈਟ੍ਰੋਜਨ 50 ਕਿਲੋ, ਫਾਸਫੋਰਸ 25 ਕਿਲੋ ਅਤੇ ਪੋਟਾਸ਼ 25 ਕਿਲੋ (ਯੂਰੀਆ 110 ਕਿਲੋ, ਸਿੰਗਲ ਸੁਪਰ ਫਾਸਫੇਟ 155 ਕਿਲੋ ਅਤੇ ਮਿਊਰੇਟ ਆਫ ਪੋਟਾਸ਼ 40 ਕਿਲੋ) ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਪਾਓ। ਬੀਜ ਬੀਜਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਫਾਸਫੋਰਸ, ਪੋਟਾਸ਼ ਦੀ ਪੂਰੀ ਮਾਤਰਾ ਅਤੇ ਨਾਈਟ੍ਰੋਜਨ ਦੀ ਇੱਕ ਤਿਹਾਈ ਮਾਤਰਾ ਪਾਓ। ਬਾਕੀ ਬਚੀ ਨਾਈਟ੍ਰੋਜਨ ਦੀ ਮਾਤਰਾ ਵੇਲਾਂ ਦੇ ਅਧਾਰ ਦੇ ਨੇੜੇ ਪਾਓ, ਇਸਨੂੰ ਛੂਹਣ ਤੋਂ ਬਚੋ ਅਤੇ ਸ਼ੁਰੂਆਤੀ ਵਾਧੇ ਦੇ ਸਮੇਂ ਦੌਰਾਨ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਮਿਲਾਓ। ਜਦੋਂ ਫਸਲ 10-15 ਦਿਨ ਪੁਰਾਣੀ ਹੋ ਜਾਵੇ, ਤਾਂ ਚੰਗੀ ਗੁਣਵੱਤਾ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਫਸਲ ਦੇ ਚੰਗੇ ਵਿਕਾਸ ਲਈ, 19:19:19 + ਸੂਖਮ ਪੌਸ਼ਟਿਕ ਤੱਤ 2-3 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ ਪਾਣੀ ਦੀ ਸਪਰੇਅ ਕਰੋ।

Sr no	Disease/Pest	Control	Amount per litre of water
1	Powdery Mildew	Thionutri	02 g per lit
2	Anthracnose	Bavistin	01 g per lit
3	Fruit fly	Coragen	5 ml per 15 lit
4	Aphid and Thrips	Confidor Super	06 ml per 15 litre

ਸਿੰਜਾਈ: ਗਰਮੀਆਂ ਦੇ ਮੌਸਮ ਵਿੱਚ ਹਰ ਹਫ਼ਤੇ ਸਿੰਚਾਈ ਕਰੋ। ਪੱਕਣ ਦੇ ਸਮੇਂ ਲੋੜ ਪੈਣ 'ਤੇ ਹੀ ਸਿੰਚਾਈ ਕਰੋ। ਖਰਬੂਜ਼ੇ ਦੇ ਖੇਤ ਵਿੱਚ ਜ਼ਿਆਦਾ ਪਾਣੀ ਭਰਨ ਤੋਂ ਬਚੋ। ਸਿੰਚਾਈ ਦੌਰਾਨ, ਵੇਲਾਂ ਜਾਂ ਬਨਸਪਤੀ ਹਿੱਸਿਆਂ ਨੂੰ ਗਿੱਲਾ ਨਾ ਕਰੋ, ਖਾਸ ਕਰਕੇ ਫੁੱਲ ਅਤੇ ਫਲ ਲੱਗਣ ਦੌਰਾਨ। ਭਾਰੀ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਵਾਰ-ਵਾਰ ਸਿੰਚਾਈ ਤੋਂ ਬਚੋ ਕਿਉਂਕਿ ਇਹ ਬਹੁਤ ਜ਼ਿਆਦਾ ਬਨਸਪਤੀ ਵਿਕਾਸ ਨੂੰ ਉਤਸ਼ਾਹਿਤ ਕਰੇਗਾ। ਬਿਹਤਰ ਮਿਠਾਸ ਅਤੇ ਸੁਆਦ ਲਈ, ਵਾਢੀ ਤੋਂ 3-6 ਦਿਨ ਪਹਿਲਾਂ ਸਿੰਚਾਈ ਬੰਦ ਕਰੋ ਜਾਂ ਪਾਣੀ ਘਟਾਓ।

ਨਦੀਨਾਂ ਦਾ ਨਿਯੰਤਰਣ: ਵਿਕਾਸ ਦੇ ਸ਼ੁਰੂਆਤੀ ਪੜਾਅ ਦੌਰਾਨ ਬਿਸਤਰੇ 'ਤੇ ਬੂਟੀ ਤੋਂ ਮੁਕਤ ਰੱਖੋ। ਸਹੀ ਨਿਯੰਤਰਣ ਉਪਾਵਾਂ ਦੀ ਅਣਹੋਂਦ ਵਿੱਚ, ਨਦੀਨ 30% ਦਾ ਝਾੜ ਘਟਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ 15-20 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ ਅੰਤਰ-ਸੱਭਿਆਚਾਰਕ ਕਾਰਵਾਈਆਂ ਕਰੋ। ਨਦੀਨਾਂ ਦੀ ਤੀਬਰਤਾ ਅਤੇ ਤੀਬਰਤਾ ਦੇ ਅਧਾਰ ਤੇ, ਦੋ ਤੋਂ ਤਿੰਨ ਗੋਡੀਆਂ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਕਟਾਈ: ਹਰਾਮਧੁ ਦੀ ਕਟਾਈ ਉਦੋਂ ਕੀਤੀ ਜਾਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ ਜਦੋਂ ਫਲ ਪੀਲੇ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਬਾਜ਼ਾਰ ਦੀ ਦੂਰੀ ਦੇ ਆਧਾਰ 'ਤੇ ਹੋਰ ਕਿਸਮਾਂ ਦੀ ਕਟਾਈ ਕਰੋ। ਲੰਬੀ ਦੂਰੀ ਦੀਆਂ ਮੰਡੀਆਂ ਲਈ ਫਲ ਪੱਕਣ ਵਾਲੇ ਹਰੇ ਪੜਾਅ 'ਤੇ ਕੱਟੋ ਜਦੋਂ ਕਿ ਸਥਾਨਕ ਮੰਡੀਆਂ ਲਈ ਅੱਧੇ-ਤਿਲਕਣ ਵਾਲੇ ਪੜਾਅ 'ਤੇ ਕੱਟੋ। ਤਣੇ ਦੇ ਸਿਰੇ ਦਾ ਥੋੜ੍ਹਾ ਜਿਹਾ ਦਬਾਅ ਅੱਧੇ-ਤਿਲਕਣ ਵਾਲੇ ਪੜਾਅ ਨੂੰ ਦਰਸਾਉਂਦਾ ਹੈ।
ਕਟਾਈ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਖੇਤ ਦੀ ਗਰਮੀ ਨੂੰ ਘਟਾਉਣ ਲਈ ਪ੍ਰੀ-ਕੂਲਿੰਗ ਕਰੋ। ਗਰੇਡਿੰਗ ਫਲ ਦੇ ਆਕਾਰ ਦੇ ਆਧਾਰ 'ਤੇ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਅੰਸ਼ਕ ਖਿਸਕਣ 'ਤੇ ਕੱਟੇ ਗਏ ਖਰਬੂਜੇ ਨੂੰ 2° ਤੋਂ 5° ਸੈਲਸੀਅਸ 'ਤੇ 95% ਸਾਪੇਖਿਕ ਨਮੀ 'ਤੇ 15 ਦਿਨਾਂ ਤੱਕ ਰੱਖਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਜਦੋਂ ਕਿ ਪੂਰੀ ਖਿਸਕਣ 'ਤੇ ਕੱਟੇ ਗਏ ਖਰਬੂਜੇ ਨੂੰ 0° ਤੋਂ 2.2° ਸੈਲਸੀਅਸ 'ਤੇ 95% ਸਾਪੇਖਿਕ ਨਮੀ 'ਤੇ 5 ਤੋਂ 14 ਦਿਨਾਂ ਲਈ ਰੱਖਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।
ngj
ਨੋਟ:- ਉਪਰੋਕਤ ਸਾਰੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਸਾਡੇ ਖੋਜ ਕੇਂਦਰ 'ਤੇ ਕੀਤੇ ਗਏ ਪ੍ਰਯੋਗ 'ਤੇ ਅਧਾਰਤ ਹੈ। ਉਪਰੋਕਤ ਜਾਣਕਾਰੀ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਥਾਵਾਂ 'ਤੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਜਲਵਾਯੂ, ਮਿੱਟੀ ਦੀ ਕਿਸਮ ਅਤੇ ਮੌਸਮਾਂ ਦੇ ਕਾਰਨ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ।